ईश्वर

जिस ईश्वर को तुम
खोजा करते हो
वह और कहीं नहीं
तुम्हारी माँ में
मौजूद है
बिस ईश्वर को तुम
खोजा करते हो
वह और कहीं नहीं
आटे में नमक की तरह
मौजूद है
जिस ईश्वर को तुम
खोजा करते हो
वह और कहीं नहीं
तुम्हारे खून में
मौजूद है
जिस ईश्वर को तुम
खोजा करते हो
वह और कहीं नहीं
स्त्री के सौन्दर्य में
मौजूद है
जिस ईश्वर को तुम
खोजा करते हो
वह और कहीं नहीं
माटी की महक में
मौजूद है
जिस ईश्वर को तुम
खोजा करते हो
शह और कहीं नहीं
तुम्हारी साँस-साँस में
मौजूद है

-दुर्गाप्रसाद झाला

सांप जब बोलेंगे

जहर ही घोलेंगे
जागरूक हैं हम
हर राज खोलेंगे
चरित्र तराजू में
महानता तौलेंगे
बेपेंदी के लौटे से
अब नहीं डोलेंगे
श्रम की चाबी से
सफलता खोलेंगे
बेशर्म साबुन से
दाग सब धो लेंगे

डॉ पुनीत कुमार
मुरादाबाद 244001

अनगिन जनम प्रणाम

पहने केसर की क्यारी माँ
जलप्रपात सा धवल शृंगार,
जिसे झिराने शीतल झरने
गाते रहते मेघ मल्हार.
जिसकी गोदी कलकल नदियां
रचतीं तीरथ धाम,
उस जननी को नत सिर मेरा
अनगिन जनम प्रणाम.
जिसे हवा चन्दन का शीतल
तिलक लगाती है,
गोधूलि नियमित करती
आकर संझवाती है.
ऊंचा हिमगिरि माँ के मस्तक
रजत मुकुट पहनाए,

सागर अपनी लहर-लहर से
स्वस्ति-वचन गुण गाए,
वेद-रिचाओं सी पावनता
गीता सी निष्काम.
उस माँ की अनुपम शोभा को
अनगिन जनम प्रणाम.
हम बड़भागी हमें मिला जो
माँ का स्वर्गिक प्यार,
बंशी जहाँ कृष्ण की गूंजी
यमुना कुंज-कछार.

जहाँ राम के पद चिन्हों से
रज-रज है साकेत,
माँ मन्दिर सी, जहाँ विराजे
रघुपति जननि समेत.
मातृभूमि की पुण्य-पताका
मिल करके फहराएंगे,
पड़ी जरूरत अगर कभी तो
सारे बलि-बलि जाएंगे.
जिस धरती पर स्वर्ण-खचित हैं
अजर-अमर कई नाम,
ऐसी अपनी मातृ-भूमि को
सौ-सौ बार प्रणाम.
अनगिन जनम प्रणाम.

के.के.मिश्र
राजेन्द्र नगर 11
सतना,

' कवि आखिर जीत जाता है '

जो कविता में डूब जाता है
वह दुनियादारी से ऊब जाता है
सारी परंपरायें, सारे समीकरण
कविता छोड़ने लगी अब व्याकरण
कवि इन सबसे क्यों रुठ जाता है?
एक नई दृष्टि, एक नई सृष्टि
कल्पनाओं की उड़ान
परंपराओं की सड़ांध
शब्दों के बयान, तालियाँ लूट जाता है
नहीं किसी का डर, कविता रहती अमर
सत्ता का समर,
समय अच्छा हो या बुरा
कवि लिखता हमेशा खरा
शब्दों से बम और बंदूक बनाता है
चुपचाप है रहता
लेखनी से है कहता
कितने अन्तरद्वंद सहता
पर नहीं होता पराजित
लोगों के दिलों को आखिर जीत जाता है।

कुमार दुष्यन्त
राम टेकरी, मन्दसौर
मध्यप्रदेश

'प्रीत की रीत पुरानी है,

अकथनीय यह कहानी है।
जिसने इसकी महिमा को पहचाना,
प्रीत की गहरायी उसने ही जानी है' ।

ललित महालकरी
इंदौर

ऐसा करों जतन

कुछ ऐसा करों तुम जतन।
खुशहाल हो अपना वतन।
देशभक्ति का हो जब गान,
देशभक्ति से मन हो मगन।
वतन के हो सैनिक हम सब,
तिरंगा हो हम सब का कफ़न।
देश की करते हैं जो भी बुराई,
जमी में कर दो उन्हें तुम दफन।
होंगी भारत माता भी प्रसन्न,
देशभक्ति की हो जब लगन।
शान से फहरे हमारा तिरंगा,
सारी धरती और सारा गगन।
कुछ ऐसा करों तुम जतन।
खुशहाल हो अपना वतन।

महेश गुप्ता 'राही
गुजरी चौक राजपुर (बड़वानी)
मो 9424056432

गांव से शहर

शहर जागता देर रात
गांव जल्द सो जाता
सुबह जल्द गांव उठता
शहर उठता देर से
खरगोश कछुए की
कहानी की तरह।
गांव उठेगा तो ही
शहर जागेगा
क्योंकि दूध चाय का
गांव से ही तो आता।
आती है ताजी सब्जियां गांव से
जल्द से जल्द उठो
स्वास्थ्य का होता मंत्र
सूरज की पहली किरण के दर्शन
देवस्थानों से बजती घंटी
पंछियों का कलरव
पशु सेवा के पुनीत कार्य
ईश्वरीय आराधना नित्य बनते
ये क्रम गांव से शहर का आधार बनाता
सर्वसुविधा होती ये शहर दर्शाता
गांवों में होती कहां सर्वसुविधा
इसलिए तो गांव -गांव कहलाता
शहर इसलिए तो इतराता।

संजय वर्मा 'दृष्टि '
मनावर जिला धार मप्र

राजनीति व्यापार हो गई

राजनीति व्यापार हो गई
कमाई का आसान साधन बन गई।
चुनाव में धन निवेश करते हैं
जीत कर कुर्सी पर बैठकर
हर योजनाएं अपने लाभ हित बना कर
धन उपार्जन के उपाय करते हैं।

देश हित का विचार नहीं है
जन समस्याओं का समाधान नहीं है
सफेदपोश के काले कारनामे
नैतिक मूल्यों का पतन हो गया
जनता का धन गबन हो गया।

संस्कृति अपनी अपमानित हुई है
संस्कारों की हानि हुई है
क्षणभंगुर धन की चकाचौंध
मृग मरीचिका कंचन का मोह
सोने की लंका भी नष्ट हुई थी
शकुनि की छल कपट की भी
हार हुई थी।

सत्य का मार्ग सदा यशस्वी
कमाई ईमान की बरकत वाली
उजली और सुख शांति देने वाली।

हंसा मेहता इंदौर
9827730 677

यही बसंत है

हवाओं का रुख बदला-बदला सा है
मिट्टी की खुशबू से मन महका सा है
पानी की कुछ बूंदे जमीन पर गिरी है
प्रकृति अनेक रंगों से सजी है
इंद्रधनुष के रंग छटा बिखरे हुए हैं
ठंड के महौल में भी डेटे हुए हैं
सफ़ेद कोहरे की चादर लपेटे धरती छुपी हुई है
पंछीयो के चहकने का सिलसिला भी बन हुआ हैं
सूरज की आंख मिचौली भी जारी है
बादलों की टोली भी काली काली है
सरसों की केसरिया फसल से खेत सजा हुआ है
इसको देखने का अपना ही अलग एक मजा है
होली, शिवरात्रि भी संग है
हर तरफ फैली खुशहाली है मदमस्त मन है
मानो धरती का योवन पूर्ण चरम पर है
यही बसंत है यही बसंत ऋतु का आगमन है

amrish jain

माल जो बिकता है

जूता चप्पलों की दुकान पर
हरमाल कौड़ियों के भाव बिकता है

एक शख्स को देखिए
जो दूर तुमसे खड़ा है
यह वही शख्स है
जो बुरे वक्त में तुम्हारा साथी था
आज उसी से नजरे चुराते हो
हां यह वही शख्स है
जो सबका मसीहा कहलाता है
फर्क इतना है कि वह
भरे बाजार में बिकता नहीं है
हां वह भला मानुष लगता है

बहादुर अली इंदौर

खूबाहिशें और हम

खूबाहिशों का बोझ उठाए जा रहे हैं हम,
जिन्दगी को यूँ ही निभाए जा रहे हैं हम।
जो मिला, वो भी अधूरा ही लगा अक्सर,
और जो ना मिला, उसे चाहे जा रहे हैं हम।
आईने रोज़ सवालात करने लगते हैं,
किसके चेहरे को सजाए जा रहे हैं हम।
खूबाहिशों ने ही सिखाया है ये फ़न हमको,
टूट कर भी मुस्कुराए जा रहे हैं हम।
हमसे पूछ गया मंजिल का पता जब भी,
अपने ही क़दमों को बहलाए जा रहे हैं हम।
खुद से हारें तो ज़माना जीत लेता है,
इसलिए खुद से ही लड़ पाए जा रहे हैं हम।
एक दिन थक कर ये खूवाहिश भी कहेगी शायद,
किस लिए इतना चलाए जा रहे हैं हम।

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर

अच्छा मिला

जो मिला अच्छा मिला ,
कर खुदा से मत गिला।
अजनबी जो लोग थे ,
सदा अपनापन मिला।
भूल जा जो चल दिया ,
ले खुशी से जो मिला।
कुछ गुमा कुछ पा लिया ,
तुझे सारा जग मिला।
गम खुशी से है बना ,
जिन्दगी का सिलसिला।
ताज को तू छोड़ दे ,
है भला तेरा किला।
यहाँ सब इक साथ हैं ,
चल खुशी से खिलखिला।

महेंद्र कुमार वर्मा
भोपाल म,प्र,
मो 9893836328

बड़ों का आशीर्वाद

मेरे हर सपने की नींव में,
माँ की ममता, पिता का विश्वास है।
जो बिना कहे ही हर दर्द समझ लें,
वही तो मेरे जीवन का प्रकाश है।

पिता की ऊँगली थामे चलना सीखा,
माँ की गोद में डर हर एक पिघल गया।
जब दुनिया ने ठोकरें दीं बार-बार,
बड़ों का आशीर्वाद ढाल बनकर मिल गया।

माँ की दुआओं में जन्नत बसती है,
पिता की सीख में जीवन की राह।
उनके आशीर्वाद से ही तो संभव हुआ,
हर अंधेरे में भी उम्मीद की चाह।

मैं जो हूँ, वो उनके कारण हूँ,
मेरी हर उड़ान में उनका नाम।
बड़ों का आशीर्वाद सर पर रहे,
तो आसान हो जाता है हर इम्तिहान।

ईश्वर से बस यही अरदास है मेरी–
माता-पिता का साया बना रहे।
उनकी दुआ, उनका प्रेम, उनका आशीर्वाद
मेरे हर कल का उजाला बना रहे।

मेरे जीवन के अँधियारे पथ पर उनकी आशीष सदैव आलोकित करती रहे,
यही कामना है मेरे अंतर्मन की।।

नेहा कुमारी

कर्मों की बात है

जन्म होना भाग्य की बात है,
मर जाना समय की बात है ।
जाने के बाद लोगों के दिलों पर राज,
करना यह अपने कर्मों की बात है।

अम्बाराम यादव,अंजनिया खुर्द,
पुनासा खण्डवा

'उठ फिर से '

गिर गया तो क्या हुआ, फिर से उठ जा,
हार को अपनी ताकत बना, आगे बढ़ जा।
जो आज दर्द दे रहा है, वही कल
सिखाएगा,
तेरा संघर्ष ही तुझे सबसे अलग बनाएगा।
मत देख कितनी दूर है मंजिल तेरी,
बस चलते रह, यही है जीत की डगरी।
रुकना नहीं तू, यही तेरी पहचान है,
हौसले वाले इंसान की अलग ही उड़ान है।

अतुल पाठक
हाथरस(उत्तर प्रदेश)

अपनों में अपनों को

किताबों में जीवन प्राण ढूंढ़ता हूं
शब्दों में अमृत शब्द ढूंढ़ता हूं
राह मिले या ना मिले कोई
सच्चा राहगीर नित ढूढ़ता हूं...
सपनों ने दिखाए ख्वाब क?ई
ख्वाब में स्वप्न नित ढूंढ़ता हूं
उथल पुथल जिंदगी यहां की
हकीकत इसकी सदा ढूंढ़ता हूं..
मोड़ तो जिंदगी के घुमावदार
रास्ते सीधे सादे नित ढूंढ़ता हूं
भीड़ है लोकतंत्र की हर जगह
सच्चे लोकतंत्र का चेहरा ढूंढ़ता हूं..
बस्ती ही बस्ती उजड़ ग?ईं यहां
लेकर आईना विकास ढूंढ़ता हूं
पल पल मुकर जाते वादों से
सच की जुबान नित ढूंढ़ता हूं..
मंजिलें तो मिली सफर में क?ई
मंजिलों में ठहराव ढूंढ़ता हूं
ना जाने किधर जा रहा जमाना
अच्छी नजरों का जमाना ढूंढ़ता हूं..
एक कदम चले दुख सुख में साथ
कांधे पे रखें स्नेह हाथ ढूंढ़ता हूं
यूं तो घेरकर बैठे हैं बहुत से पास
अपनों में अपनों को बस ढूंढ़ता हूं..

लाल बहादुर
श्रीवास्तव
शब्द शिल्प, एल
आई जी,ऐ-15जनता
कालोनी मंदसौर
458001मध्यप्रदेश

अपनी कथनी...

अपनी कथनी
कह न पाऊं
मनमानी... बरबादी में
नैन रहे सजल... !
जीवन की
भागम भाग
आपाधापी में

हृदय में बसी
संगिनी अविचल... !
मौन रहे जो
वह भाव समेटे
शब्द रूप ले
मुखरित है अविरल... !

नदियां..., बादल
पर्वत..., नभ, तल
प्रेम..., विरह, आनंद
वेदना..., अश्रुजल... !

इन सबकी
प्रशस्त वाणी बन
कविता बहती
काग़ज़ पर कल कल... !!

मनोज शाह
मानस
नारायणा
गांव
नई दिल्ली

गज़ल

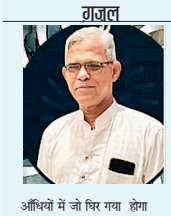

आँधियों में जो घिर गया होगा
वो दिया फिर नहीं जला होगा

नींद यूँ दिन में आ रही होगी
रतजगे में अगर जगा होगा

फिर लड़ाई न लड़ सकेगा वो
डरअगरदिल में आ बसा होगा

हर समय जो करे सियासत है
सब उसी का किया धरा होगा
एक ही बात पर अड़ेगा जो
दूर हरगिज न फासला होगा

हमीद कानपुरी
179, मीरपुर, कैण्ट, कानपुर-
208004

कभी कभी

कभी-कभी
सब कुछ होते हुए भी
कुछ अधूरा-सा लगता है,
भीड़ में खड़े होकर भी
मन, खुद से दूर भागता है।
कभी-कभी
हँसी ओढ़े चेहरे के भीतर
चुप्पी का शोर होता है,
और शब्दों के रहते हुए भी
कहने को कुछ नहीं होता है।
कभी-कभी
बीते पल बिना दस्तक दिए
आज में आ बैठते हैं,
और वर्तमान की कुर्सी पर
यादों के काँटे चुभोते हैं।
कभी-कभी
रात बहुत लंबी हो जाती है,
नींद रूठ जाती है आँखों से,
और छत को ताकते-ताकते
जिंदगी सवाल पूछती है हमसे।
कभी-कभी
बस इतना ही काफ़ी होता है
कि कोई पूछ ले – 'कैसे हो? '
और भीतर जमी बरसों की थकान
आँखों से बह निकले।
कभी-कभी
टूटना भी ज़रूरी होता है,
खुद को फिर से जोड़ने के लिए,
क्योंकि हर बार बिखरना
हार नहीं –
कभी-कभी
शुरुआत होता है।

मुकेश कुमार
बिस्सा
जैसलमेर

हाइकू...

1. उदास आँखें
कमजोर निगाहें
तकती राहें
2. जिन्दा रहा मैं
सिर्फ़ तेरी खातिर
तुम शातिर
3. यहाँ से वहाँ
भटकता रहा मैं
मिला तू कहाँ
4. कौन अपना
माया का ये संसार
जग सपना
5. तेरी मुस्कान
दिखे इंद्रधनुष
हर ले प्राण
6. न आयी नींद
किये बड़े प्रयास
तू जो न पास
7. एक पल ने
उम्र भर सताया
हाथ न आया
8. समझ आया
कहाँ वो अपनत्व
सिर्फ़ दिखावा
9. हुआ बेवफ़ा
किया प्रेम जिस से
कहूँ किस से
10. तमाम उम्र
किया सबका भला
स्वप्नों ने छला
11. जलती शमा
जल जाते पतंगे
किसकी खता
12. कर विश्वास
सामर्थ्य है तुझ में
छू ले आकाश
13. गाने पुराने
दें मन को सुकून
यादों के दाने
14. चूल्हे की रोटी
वो सरसों का साग
कहाँ वो स्वाद
15. धन्य हैं आप
किए जो प्रकाशित
शब्दों के किले

डॉ. सारिका मुकेश
(तमिलनाडु)

खो दिया है अस्तित्व मैंने

किसके बिरहा में
ले न सकूं मैं नाम उसका
जो बिछड़ गया जीवन से मेरे
मैं थी गुड़िया सी रानी
माता-पिता की आंखों की रानी
हंसता खेलता बीता बचपन मेरा
आज खो दिया मैंने सुहाग अपना
है कैसी बिरहा की रातें
मैं बिन चकवा के चकवी
कौन जाने दुखड़ा मेरा
खो दिया अस्तित्व मैंने अपना

बहादुर अली इंदौर

दिप जले अँधियार

मन भावन मन न लागे अब, तुझसे नयना तिरछी नजर दी मार,
प्रिय तुम ही हो पुष्पलता की मंगल छाया, दिप जले अँधियार ।
ना कोई अपना इस दुनिया में, ना है कोई पराया मान,
सारी मानव श्रृष्टि जगत सुधार से पहले, मन आँगन बुहार ।
मीत है तेरी सारी दुनिया ना लगता,जीवन अकेला मान,
सत यौजन लांघ के कपि बूटी संजीवनी, दी उसने उखार ।
मन नहीं लगता है तेरे बिन, प्रिय की याद सताती है हर पल,
और हुआ सूरज उगा अब ले झाड़ू, घर आँगन कचरा निकार ।
आवत ही हर्षित भये नैना, कहां की ईट कहां का रोड़ा,
बन मानुष तु सच्चा जगत में, चाहत तेरी बढ़ती जाए जुहार ।
मंगल कामना तेरी शहनाई की, आहट गूंज रही मधुबन,
साधना कर तपस्या जगत सुधार से पहले, मन आँगन बुहार ।

के, के, कौशल
इन्दौर, मध्यप्रदेश

जय माँ शारदे

(रूपमाला छंद, 14+10 पर यति, मापनी- 2122 2122, 2122 2)

दास हूँ माता तुम्हारा, थाम लेना हाथ।
दो मुझे माता सहारा, टेकता हूँ माथ।
हो रही है द्वार पे माँ, प्यार की बरसात।
भोर का सूरज उगा दो, काट दुख की रात।
इस जगत पर शारदे माँ, हैं बहुत उपकार।
दूर करतीं संकटों को, ओटती हो भार।
मैं कहाँ कहता मुझे दे, मोह मद सम्मान।
माँ मुझे रखना चरण में, गा सकूँ गुणगान।
लिख सकूँ माता सदा मैं, इस जगत की पीर।
मस्तमौला भाव हो बस, विश्व हित गंभीर।
लेखनी को सिद्ध कर दो, भाव से भरपूर।
दे मुझे सामर्थ्य इतनी, कर सकूँ दुख दूर।
कंठ में सुर दो भवानी, राग का दो ज्ञान।
वंदना मनहर सुनाऊँ, हो सभा में मान।
राह मैं भटकूँ न दाती, नित्य शुभ का मेल।
बालकों को शारदे माँ, नित खिलातीं खेल।

महेश चंद्र शर्मा राजस्थान

वक्ते हरजाई का

साथ तेरे क्या हुआ, कैसे हुआ, ये ग़म न कर।
रो के अपने आंसुओं की क़ीमतों को कम न कर।।
एक तो समझेगा तुझको इस जहां की भीड़ में।
यार अपने आप को तू इस क़दर बरहम न कर।।
फाड़ के बिखरा दे तू सड़कों पे सब कागज के फूल।
वक़्ते हरजाई का सारी ज़िंदगी मातम न कर।।
साथ तेरा छोड़ कर के वो गया अच्छा रहा।
वक़्त का झींका था उसका ज़िक्र यूं पैहम न कर।।
हर्फ़ ही किस्से के सब दम तोड़ देंगे फैल कर।
यूं किताबें ज़िंदगी के कागज़ों को नम न कर।।
कौन है जो फुसफुसा के कह रहा है कान में।
छोड़ दे बेकार की बातें मिरे हमदम न कर।।
बारिशों में भीगने के लोग आदी हो चुके।
बंद कर दामन भिगोना आंख यूं पुरनम न कर।।

प्रणय प्रभात
श्योपुर (मप्र)

रिश्वत बना हथियार

रिश्वत घोड़ा बन गया बाबू हुआ सवार
इससे पाया है सदा कोठी मोटर कार
बाबू रिश्वतखोर है या कहें घूसखोर
दफ्तर दफ्तर ही चले बाबू का ही जोर
इस पर रमेश मत करें बातें तू बेकार
रिश्वत उसका बन गया खास यहां हथियार
उनके ही घर में सदा आती देख बहार
गले में जब से पहना भ्रष्टाचारी हार
काम करता है तभी दे बाबू को दाम

होगा फाइल का सभी रुक तेरा काम
बिन रिश्वत होता नहीं बाबू से ना काम
फाइल का लेता सदा निश्चित रमेश दाम
रिश्वत हेतु खूब बना नियम चाहे हजार
फिर भी रहे रिश्वत तो क़ानून पर सवार
आदत से लाचार है चरते बनकर ढ़ोर
बाबू आज बना यहां रमेश रिश्वतखोर
रिश्वत भ्रष्टाचार की चलती खूब दुकान
बिना पूंजी का धंधा चले खूब श्रीमान
रिश्वत पर अब ना करें मन चाहा तू शोर
चले न कोई भी यहां इस पर तेरा जोर

रमेश
मनोहरा
शीतला
माता गली
जावरा (म.प्र.)
457226,
जिला रतलाम
मो.
9479662215

मंदिरों की घंटियों कि आवाजों में तुम हो....

मस्जिदों की अजानो की आवाजों में तुम हो..
. मेरी सुबह.. मेरी शाम में तुम हो...

नदियों के बहते लहराते कल कल पानी में तुम हो.
इन मस्त मस्त हवा के झोंको में तुम हो...

फूलों की इन खुशबू में तुम हो...
सारी प्रकृति तुम में.. और प्रकृति में तुम हो...
मेरे इस जीवन में प्रेम का पथ तुम हो....

मुकेश पिपलाद प्राचार्य शास मॉडल उच्चतर मा विद्यालय
बाकानेर